Chapter-3

अध्याय : १

गुजराती साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा

पूर्ववर्ती अध्याय के अंतर्गत हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा तथा उसकी आरम्भिक स्थिति का हम जो अवलोकन कर आये हैं, ठीक वैसी ही स्थिति गुजराती के आरम्भिक ऐतिहासिक उपन्यासों की है। आरम्भ में कहाँ भी गुजराती गद्य विकास की अवस्था में था।[1] श्री फार्बेस (Mr.Alexander Kinlock Forbes) प्रभृति अंग्रेज विद्वान गुजराती लेखकों को गुजराती भाषा में अपनी रचनाएं लिखकर गुजराती साहित्य को समृद्ध करने की प्रेरणा दे रहे थे। इसके परिणाम स्वरूप एवं अपनी पूना यात्रा में मराठी गद्य की प्रगति का अवलोकन करने पर और तत्कालीन शिक्षाधिकारी श्री रसेल (Mr. Russel) की प्रेरणा से श्री नंदशंकर तुलजाशंकर मेहता ने गुजरात के अंतिम राजा करण पर गुजराती में " करण घेलो " (१८६६ ई०) शीर्षक प्रथम उपन्यास की रचना की।[2] यह एक सुयोग की बात है कि गुजराती का यह प्रथम उपन्यास ही एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसने आगे चल कर उपन्यास विधा का रुख ही ऐतिहासिक उपन्यासों की सृष्टि की ओर प्रवर्तित कर दिया। तब से ही गुजराती साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की एक समृद्ध परंपरा दृष्टिगोचर होती है।

श्री नंद शंकर मेहता से लेकर श्री ई० सू० देसाई तक के उपन्यासों में ऐतिहासिक उपन्यास के अपेक्षित तत्त्वों के संयोजन का अभाव है। इस युग के

1. "When Nandshankar paid a visit to Poona to observe the working of Educational institution there, he noted with interest, the progress made by Marathi prose; and it was brought home to him that the Gujarati Language was lacking in well-developed prose... Dr. R.I.Patel, History of Gujarati Novel, pps. 71-72.

2. At the instance of our Mr. Russel, an Educational Inspector, at the time, Nandsankar wrote a historical novel entitled "Karan Ghelo," the last Rajput King of Gujarat". Dr. R.I.Patel, History of Gujarati Novels, p. 72.

लेखकों ने ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप के विषय में बिना मौलिक चिंतन किये अपने अंग्रेजी लेखकों के अध्ययन, प्रभाव और प्रेरणा से अपना लेखन कार्य आरंभ किया था ।[1] अतः इनमें ऐतिहासिक उपन्यास की शिल्प गत कतिपय न्यूनताओं का होना स्वाभाविक हैं । ये रचनाएं शिल्प की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यास की प्रयोगावस्था का स्वरूप मात्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत करती हैं । गुजराती साहित्य में वास्तविक ऐतिहासिक उपन्यास का स्वरूप श्री कन्हैयालाल मा० मुंशी के " पाटण की प्रभुता ", " गुजरातनो नाथ ", " राजाधिराज " आदि उपन्यासों में परिलक्षित होता है । अतः अपने पूर्ववर्ती पृष्ठों में निर्दिष्ट वस्तुगत और शिल्पगत अध्ययन की सुविधा के विचार से गुजराती ऐतिहासिक उपन्यास-परंपरा को भी दो भागों में बांट कर उसका अनुशीलन किया जा सकता है : (१) आरंभिक युग, (२) विकास युग ।

१ आरंभिक युग - १८६६ से १९१५

२ विकास युग - १९१६ से अबतक ।

आरम्भिक युग : (१८६६-१९१५)

इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासों में श्री नंदशंकर तुलजाशंकर मेहता (१८३५ से १९०५ ई०) का " करण घेलो " (१८६६), श्री महीपतराम रूपराम नीलकंठ (१८३९-१८९१) के सुधरा जेसंग (१८८०) और " वनराज चावडो (१८८१), श्री

1. Dr. R.I.Patel, History of Gujarati Novels, p. 70.
"In their literary adventures they were more than willing to learn from the English masters, especially the romantic writers of the early nineteenth century. It was this literary urge to follow in the foot-steps of England that led to the triumphant appearance of the first novel in Gujarati - "History of Gujarati Novels" - p.70.
Dr. R.I.Patel

अनंत प्रसाद त्रिकमलाल वैष्णव का " राणक देवी " (१८८४), श्री जेहांगीर अरदेशीर तालेयारखान के रत्नलक्ष्मी (१८८१) और " मुद्रा अने कुलीन " (१८८४) तथा श्री इच्छाराम सूर्यराम देसाई (१८५४-१९१२) का " गंगा " (१८८८) आदि उपन्यासों का समावेश होता है ।

ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप के विषय में इन लेखकों के कोई निजी सैद्धांतिक विचार प्राप्य नहीं हैं । इनकी कृतियों एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हमारे पूर्ववर्ती अध्यायों में अभिव्यक्त " ऐतिहासिक उपन्यास " की अपेक्षा " ऐतिहासिक रोमांस " की ओर ही उनका ध्यान अधिक था । अतः इनकी कृतियों में इतिहास की पृष्ठभूमि का आश्रय होते हुए भी आवश्यकतानुसार कल्पना का स्वच्छन्द प्रयोग दृष्टिगत होता है ।[१]

इस युग के लेखक प्रायः सुधारवादी प्रवृत्तियों से प्रेरित हैं । अतः इनकी रचनाओं की विशेषताएं संक्षेप में इस प्रकार हैं - (१) नैतिकता का उपदेश, (२) सामाजिक रूढियों और कुरीतियों का उन्मूलन, (३) अंध विश्वासों की कटु आलोचना और उनका उपहास, (४) आधुनिक (वैज्ञानिक) युग के अनुरूप सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में आवश्यक परिवर्तन और (५) इस प्रकार अभ्युत्थान की ओर प्रयाण आदि लक्ष्य क्रियाशील रहे हैं ।

पूर्ववर्ती विवेचन के अनुसार इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास में कल्पना का उन्मुक्त प्रयोग हुआ है, ऐतिहासिक तथ्यों का तो वहां पृष्ठभूमि के रूप में वातावरण का आभास मात्र करा देने के लिए प्रयोग हुआ है । अतः

१ श्री नंद शंकर मेहता, करण घेलो, प्रस्तावना पृ० १

इन्हें वर्गीकरण की दृष्टि से कल्पना-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में समाविष्ट किया जा सकता है। शिल्प की दृष्टि से ये कृतियां साधारण कोटि की हैं। किंतु श्री मुंशी की रचनाओं में विकसित ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप का अध्ययन करने के लिए इनके ऐतिहासिक महत्त्व को असंदिग्ध रूप से स्वीकार किया जा सकता है। अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों की रचनाओं में वर्णन-प्रियता, कथा शैथिल्य, पात्रों की व्यक्तित्व हीनता, और कतिपय स्थलों पर वातावरण की अयथार्थता आदि दोनों के अभाव के कारण ही श्री मुंशी के उपन्यास गुजराती साहित्य में श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यास के श्रेय को प्राप्त हो सके हैं। जिसके स्पष्टीकरण के लिए इस युग की कृतियों पर संक्षेप में विचार कर लेना यहां उपयुक्त होगा।

श्री नंद शंकर तुलशीशंकर मेहता : करण घेलो (१८६६)
(१८३५-१९०५)

ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप और शिल्प के सम्बन्ध में श्री नंद शंकर मेहता के सैद्धांतिक विचार तो अप्राप्य हैं। किन्तु " करण घेलो " की प्रस्तावना में उसके ऐतिहासिक तथ्यों सम्बन्धी अपना मत और उसका हेतु स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है, " करण घेलो " सम्बन्धी जो तथ्य इतिहास से प्राप्त होते हैं, उनमें अन्य नई कल्पित बातें बढ़ा कर इसकी कथा का विस्तार किया गया है। जिस समय ये सब घटनाएं घटीं, उस समय लोगों के रीति-रिवाज कैसे थे, उनके विचार कैसे थे, गुजरात के राजपूत राजा, तथा दिल्ली के मुसलमान बादशाह की राजनीति आदि कैसी थीं, राजपूत पुरुष और स्त्रियों की शूर-वीरता तथा जाति और कुल का अभिमान कितना था, मुसलमानों में कितना जोश, धर्मांधता तथा हिन्दुओं और उनके धर्म के प्रति कितना द्वेष था इत्यादि अन्य कई बातों का यथा सम्भव यथार्थ चित्र प्रस्तुत करना ही इस पुस्तक (कृति) का हेतु है। " [1]

१ श्री नंदशंकर मेहता, करण घेलो, प्रस्तावना, पृ० १

लेखक के उपर्युक्त वक्तव्य से प्रकट है कि उसने इतिहास और कल्पना के संयोजन के साथ तद्युगीन यथार्थ वातावरण के निरूपण को अपना लक्ष्य घोषित किया है। अपनी कृति के लक्ष्य के सम्बन्ध में श्री नंदशंकर मेहता ने कहा है, " मेरी इच्छा थी कि कोई ऐसा ऐतिहासिक समय पसंद किया जाय, (जिसमें) एक युग अस्त हो रहा हो, दूसरा उदयगिरि पर उदीयमान हो (और उसमें) अभिमान का पतन, व्यभिचार की हार, धर्म की जय और पाप का क्षय – के चित्र आलेखित करना उचित हो। " [1] इस प्रकार कृति में लेखक का नैतिकतावादी दृष्टिकोण प्रकट होता है। डा० आर० आई० पटेल के अनुसार लक्ष्य में श्री मेहता श्री लिटन (Lytten) से प्रभावित हैं, किंतु ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप के विषय में वे सदैव स्काट को अपना आदर्श मानते रहे हैं। [2]

उपर्युक्त विवरण के अंतर्गत लेखक का जो निजी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है, उसके प्रकाश में प्रस्तुत उपन्यास " करण घेलो " (१९६६ ई०) के अनुशीलन करने पर हमें ज्ञात होता है, वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया है। इसकी कथावस्तु गुजरात के अंतिम राजपुत राजा करण से सम्बन्धित है। इसके

१(क) श्री नंदशंकर मेहता – करणघेलो प्रस्तावना पृ० १

१(ख) श्री मार्कंडभाई मेहता, " नंद शंकर जीवन चरित्र (१९६१), पृ० १०० १७७

२ डा० आर० आई० पटेल, हिन्दी आपन गुजराती नावेल्स, पृ० ९१–९२
As we have seen in the choice of the theme, Nandsankar seems to have been influenced by Lyteen . .... p.92.
So far as the manner of presenting this Historical theme is concerned Nansankar chose Scott as his master, at least in theory." , p.93.

ऐतिहासिक आधार के रूप में लेखक ने श्री फार्बस (Mr. A.K. Forbes) की रासमाला का उन्मुक्त प्रयोग किया है। कतिपय अंशों में " कुमार पाल चरित " का आधार भी ग्रहण किया प्रतीत होता है। [1] इसमें करण द्वारा अपने मंत्री माधव की पत्नी रूपसुंदरी का (उसकी अनुपस्थिति में) हरण, उसकी रक्षार्थ माधव के छोटे भाई केशव का बलिदान और उसकी पत्नी गुण सुंदरी का सती होना, व राजा और नगर को अभिशाप, माधव का प्रतिशोध के लिए दिल्ली पहुंच अलाउद्दीन को आमंत्रित कर उसकी सेना के साथ पाटण पर आक्रमण के लिए प्रयाण, इधर हरपाल का " बाघरा " के उत्पातों से नगर, महल और फुलराणी को मुक्ति दिला करण से बड़ी जागीर पाना, पश्चात्ताप से विदग्ध मन राजा करण की सिद्धपुर की यात्रा और अस्पृष्ट भाट द्वारा करण को अभिशाप, मुसलमान सेना के आगमन के समाचार और करण का उसके साथ युद्ध, हरपाल द्वारा युद्ध भूमि से उसका पलायन, करण की रानी कौलादेवी का दिल्ली अलाउद्दीन के पास पहुंचाया जाना, करण का देवगढ के राजा रामदेव के यहां आश्रय, करण की छोटी लड़की देवल देवी और रामदेव के पुत्र शंकर देव में परस्पर प्रेम, उसके विवाह-प्रस्ताव की करण द्वारा अस्वीकृति, काफूर का देवगढ पर आक्रमण के लिए प्रयाण, बादलान पर घेरा, विवशता की स्थिति में भीम देव और देवल के विवाह की सम्मति, और पलायन, मार्ग में मुसलमान के हाथों पड कर देवल का दिल्ली भेजा जाना, और वहां शाहजादा खिजर खां के साथ उसकी निकाह होना, काफूर का देवगढ पर पुनः आक्रमण और इस युद्ध में करण का अज्ञात राजपूत सिपाही के रूप में मरना आदि प्रसंगों की संघटना की गई है।

पर्याप्त अंशों में इतिहास की रक्षा करते हुए भी लेखक ने कतिपय

---

1 श्री केशवलाल ह० कामदार : करण घेलोनो ऐतिहासिक संदर्भ, ग्रन्थ, १९६५

ऐतिहासिक विसंगतियाँ उपस्थित कर दी हैं, जो ऐतिहासिक उपन्यासकार के लिए क्षम्य नहीं समझी जातीं। तथा इसके साथ ही वे लेखक के अपने पूर्व घोषित संकल्प के भी विरुद्ध जाती हैं। यह निम्नांकित तथ्यों के अध्ययन से स्पष्ट है :

(१) बाबरा और शक्ति के ऐतिहासिक पक्ष के सम्बन्ध में लेखक की अज्ञानता, यहाँ दृष्टिगत होती है।[१] " बाबरा " हेमचंद्र के संस्कृत " द्वयाश्रय " काव्य के अनुसार विदेशी युद्ध-विद्या में निष्णात सिद्धराज का एक जागीर दार था, जिसे सिद्धराज ने द्वन्द्व युद्ध में पराजित कर अपने अधीन किया था। इसी प्रकार " शक्ति " झाला वंश के राजपूतों की कुल देवी है।

(२) फारसी इतिहासकारों ने उल्लुख खाँ और नसरत खाँ द्वारा आबू और सिंध के मार्ग से गुजरात पर आक्रमण करने का उल्लेख किया है। यह ऐतिहासिक तथ्य भी श्री नंदशंकर के हाथों सुरक्षित नहीं रह सका।

(३) इसी प्रकार कौला का पुरुष वेश में पलायन,

(४) भील नायक की हत्या,

(५) कर्ण का अपने अंतिम दिनों में गुजरात वापस आना, आदि बातें इतिहास विरुद्ध हैं। इतिहास कारों के अनुसार (कमला) कौला को सीधी दिल्ली ले जाया गया था और करण पाटण से निकलने के बाद पुनः गुजरात में कभी नहीं आया।

(६) समसामयिक कवि अमीर खुसरो ने देवल देवी और शाहजादा खिजर खाँ के

---

१ ग्रंथ दिसम्बर, १९९६ के अंक में " श्री केशवलाल हि० कामदार के " करण घेलो " जो ऐतिहासिक संदर्भ लेख के आधार पर

प्रेम और विवाह के प्रसंगों को पद्यबद्ध किया है। अतः उसकी प्रामाणिकता का निरूपण भी ऐतिहासिक प्रमाणों के विरुद्ध ठहरता है। इनमें से बाबरा तथा शक्ति और हरपाल के प्रसंग अनुश्रुतियों पर आश्रित कहे जा सकते हैं। किन्तु अनुश्रुतियों का प्रयोग इतिहास के अभाव में ही उपादेय है, अन्यथा वह लेखक के ऐतिहासिक ज्ञान की अनभिज्ञता व्यक्त करता है।

ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों के निरूपण में ऐतिहासिक असंगतियों के अतिरिक्त उपन्यास के वातावरण के निरूपण में भी लेखक ने ऐतिहासिक विश्वसनीयता को प्रमाणित नहीं किया है। उनकी इस ऐतिहासिक विसंगति की ओर इंगित करते हुए डा० धीरुभाई ठाकर ने लिखा है -

" उसमें ("करण घेलो " में) उनके द्वारा किया स्थल-काल का वर्णन, उनके अपने युग के सुरती जीवन का चित्र है। करण के समय के पाटण का वर्णन करते समय उनकी दृष्टि के समक्ष उनकी अपनी जन्मभूमि सूरत ही विद्यमान रही है। सुरती लाला की रसिकता, उत्सवप्रियता, संगीत, कला, आदि विषयक शौक आदि का आरोप उन्होंने पाटणवासियों में किया है। सूरत की सन् सैंतीस (१९३७ ई०) की आग कैसी भयंकर थी और इसकी घटना ने लोगों के मन में भूत-प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, इत्यादि के वहम और भय कैसे रूढ बना दिये थे यह पाटण की आग का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया है। " [१]

इस प्रकार " करण घेलो " में देश-काल का निरूपण दोषपूर्ण है और ऐतिहासिक उपन्यास की विधा के लिए बहुत ही अवांछनीय। यह पूर्ववर्ती पृष्ठों में निर्दिष्ट किया

१ डा० धीरुभाई ठाकोर, अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा, पृ० ५७

जा चुका है कि ऐतिहासिक उपन्यास में पात्र, घटना और वातावरण में से ऐतिहासिक देश-काल और वातावरण का निरूपण या उसका निर्दोष आभास तो अनिवार्यतः वांछनीय है। इसकी उपेक्षा कृति को ऐतिहासिक उपन्यास के गौरव से वंचित कर देती है। ऐतिहासिक तथ्यों के साथ कल्पना का यह निर्बाध प्रयोग उसे एक रोमांसपूर्ण कृति का स्वरूप मात्र प्रदान कर सकता है। यही स्थिति यहाँ दृष्टिगोचर है।

उपर्युक्त दोषों के बावजूद भी करण घेलो का साहित्य में अपना स्थान है और गुजराती साहित्य में उसका अपना एक अक्षुण्ण महत्त्व भी है। इसका श्रेय जाता है कृति की वर्णनात्मकता को। उपन्यास में स्थल-काल पात्र और प्रसंगों के वर्णन इतने सुंदर और सजीव हैं कि वे इस कृति के सर्वोत्तम अंग से हैं। लेखक की समृद्ध गद्य-शैली में अंकित ये वर्णन उसे सदैव अविस्मरणीय और गौरवास्पद स्थान का अधिकारी बनाये रखने के लिए यशस्वी हैं।

शिल्प की दृष्टि से " करण घेलो " का कथावस्तु वर्णनात्मकता के कारण काफी शिथिल है। पात्रों का चरित्र-चित्रण भी अनुपयुक्त, अयथार्थ और अप्रभावशाली है। उसके संवाद भी अनाकर्षक और निर्जीव से लगते हैं। किन्तु फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से नर्मद युग की श्रेष्ठ रचनाओं में यह अग्रगण्य और लोकप्रिय कृति है।[1]

(२) श्री महीपतराम रूपराम नीलकंठ : (१८२९-१८९१)

१ सपरा जेसंग, (१८८०)

२ वनराज चावडो (१८८१)

श्री नंद शंकर मेहता के " करण घेलो " की लोकप्रियता ने अन्य समसामयिक लेखकों को भी ऐतिहासिक उपन्यास की रचना के लिए आकर्षित किया।

१ डा० धीरुभाई ठाकर, अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी रूपरेखा, पृ० ५७

श्री महीपतराम उनमें से एक हैं। इंग्लैण्ड में उच्च अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मे भी अपने युग की प्रवृत्तियों के अनुकूल एक शिक्षण शास्त्री और सुधारवादी थे। अतः अपने समय की जनता में प्रवर्तित अंधविश्वास और रूढ़ियों का उन्मूलन कर उसे एक आधुनिक युग के अनुरूप उन्नत जाति के रूप में देखना चाहते थे। इसलिए उनकी दृष्टि गुजरात के वीर महापुरुषों की ओर गई और " सधरा जेसंग " और " वनराज चावडो " जैसे दो ऐतिहासिक उपन्यासों की सृष्टि अस्तित्व में आई।

श्री महीपतराम नीलकंठ की ये दोनों कृतियां श्री ए० के० फार्बस (Mr. A.K. Forbes) की " रासमाला " पर आधारित हैं। इनमें लेखक का मुख्य लक्ष्य गुजरात के भव्य अतीत के चित्रण द्वारा तद्युगीन जनता को साहस और आत्म विश्वास के साथ अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर गतिमान करना है।

ये दोनों उपन्यास मध्य युगीन गुजरात के राजा सिद्धराज और वनराज के आद्योपांत जीवन की घटनाओं पर आधारित इतिवृत्तात्मक रचनाएं हैं। इनमें लेखक उनके जीवन के ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी कल्पना से संवर्द्धित कर प्रस्तुत करता चला गया है। इस रूप में ये उपन्यास सिद्धराज और वनराज के जीवन चरित्र जैसे लगते हैं, यद्यपि लेखक यथा साध्य रोमांस पूर्ण प्रसंगों का सर्जन करने के लिए प्रयत्नशील भी है। " वनराज चावडो " की कथा तो वास्तव में साहस और रोमांस पूर्ण जीवन से युक्त है। किन्तु श्री महीपतराम उसका समुचित रूप में उपयोग नहीं कर सके। कादम्बरी की भांति वह एक कथा में अन्य की उत्पत्ति कर इन कथाओं से अपने सुधारात्मक लक्ष्य की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील लगते हैं। उनकी इन कथाओं में गोल्ड-स्मिथ की " एडिवन अेन्ड एन्जेलिना " (Mr.Goldsmith's Edwin and Aggelina) (पुष्पक और चपला की कथा में) श्री वाशिंग्टन इरविंग की " रिप वान विन्कल " (Mr.Washington, Irving's Rip Van Winckle में) - अल्लम की विचित्र कथा और " सधरा जेसंग " में शेक्सपीयर के मरचेन्ट आफ वेनिस (Shakespeare's Merchant of Venice) के सुंदर रूपांतरों की छाया परिलक्षित होती है। अतः

कथावस्तु के संघटन की ओर लेखक सर्वथा उदासीन दिखाई देता है । उसके पात्र सत्वहीन और प्रचारात्मक प्रवृत्तियों के साधन मात्र लगते हैं । देश-काल और वातावरण के निरूपण में श्री महीपतराम ने भी नंदशंकर का अनुसरण किया है । आपने भी सुदूर अतीत के निरूपण में अपने युग के ही वातावरण का चित्रण किया है । सत्य तो यह है कि तत्कालीन सामान्य जन जीवन के सम्बन्ध में उस समय महीपतराम के पास कोई सामग्री प्राप्य नहीं थी । अतः उन्होंने अपने वर्तमान के आधार पर ही अतीत का चित्रण करना उपयुक्त समझा ।[1] यह वास्तव में ऐतिहासिक उपन्यास के लिए सर्वथा अनुपयुक्त बात है ।

शिल्प की दृष्टि से महीपत राम की श्री नंदशंकर की अपेक्षा कोई विशेष उपलब्धियाँ नहीं हैं । इसीलिए उनकी कृतियाँ अपने युग में भी विशेष महत्त्व की अधिकारिणी नहीं बन पाईं । गुजराती साहित्य में उनका केवल ऐतिहासिक महत्त्व है ।

नेहांगीर अदशीर तालेयारखान :

१ रत्नलक्ष्मी (१८८१)

२ मुद्रा और कुलीन (१८८४)

अपने समसामयिक लेखकों के उपन्यास लिखने के प्रयोग से प्रोत्साहित होकर तालेयारखान ने भी १८८१ में " रत्न लक्ष्मी " ऐतिहासिक उपन्यास की रचना की और उसके तीन वर्ष पश्चात् ही उससे भी समृद्ध " मुद्रा अने कुलीन " शीर्षक अन्य

1. "The fact that little was know about the life of the common people in the days he tried to write about offered Mahipatram a tempting opportunity to project the present into the distant past."

Dr. R.I.Patel, 'History of Gujarati Novels', p. 115.

उपन्यास अस्तित्व में आया ।

श्री तालेयारखान के दोनों उपन्यास अपने पूर्ववर्ती लेखकों के उपन्यासों की भाँति सुदूर अतीत पर आश्रित न होकर, उसकी स्मृति में स्पष्ट ऐसे १८५७ के गदर पर आधारित हैं । इन दोनों उपन्यासों में भी इतिहास का आश्रय उसने केवल पृष्ठभूमि के रूप में ही लिया है । उपन्यासों के मुख्य पात्र और उनके घटना-प्रसंग सर्वथा कल्पनाजन्य हैं । " रत्नलक्ष्मी " में नाना साहब और " मुद्रा अने कुलीन " में टीपू सुलतान का प्रयोग वातावरण को ऐतिहासिकता प्रदान करने के उद्देश्य से ही किया गया है ।

लेखक एक पारसी पुलिस अधिकारी है । अतः तदनुरूप इन दोनों कृतियों में उसका लक्ष्य ब्रिटिश-शासन की वरिष्ठता का प्रतिपादन कर अपने समसामयिक लेखकों और सामाजिकों को अंग्रेजों के साथ और सहयोग से प्रगति करने की अपील करना है । साथ ही सुधारवादी प्रवृत्ति के अनुसार वह एक ओर विधवा-विवाह और प्रेम-विवाह का समर्थन करता है, तो दूसरी ओर बाल-विवाह की व्यंग्यात्मक आलोचना भी ।

पूर्ववर्ती लेखकों की अपेक्षा इन दोनों कृतियों में, इतिहास, रोमांस, और सामाजिक एवं राजनीतिक आदर्श एक सामंजस्यपूर्ण स्थिति में दृष्टिगत होते हैं । किन्तु इनके कलात्मक-ऐक्य की साधना में लेखक के प्रयत्न सफलता के लिए कुछ अपर्याप्त ही रहते हैं । अतः उसके उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से युक्त रोमांस पूर्ण उपन्यास की संज्ञा से ही अभिहित किये जा सकते हैं । चरित्र-चित्रण में तालेयार खान अपने पात्रों की स्थूल रेखाकृतियाँ मात्र प्रस्तुत कर कथा की ओर अग्रसर हो जाता है । " रत्नलक्ष्मी ", " मुद्रा अने कुलीन " के रेखा चित्र काफी अच्छे बन पड़े हैं । अपनी

ब्रिटिश-भक्ति के कारण नाना साहब और टीपू सुल्तान के चरित्र-चित्रण में उसने स्वछंदता का प्रयोग कर उन्हें कलुषित रूप में चित्रित किया है। वातावरण के निरूपण में लेखक के प्रयत्न काफी सफल रहे हैं। किंतु इसमें कल्पना के सहयोग से निखार लाने वाली कला का सर्वथा अभाव है।

इस प्रकार कतिपय स्खलनों और न्यूनताओं के बावजूद भी लेखक की ये दोनों कृतियां वातावरण प्रधान ऐतिहासिक रोमांस कही जा सकती हैं। गुजराती साहित्य में उपन्यास और गद्य-शैली के विकास में इनका भी अपना योगदान है।

निष्कर्ष :
oooooooo

विवेच्य युग के उपन्यासकारों ने अपने रचना-कार्य के लिए पाश्चात्य साहित्यकारों और उनकी कृतियों को अपना आदर्श मान अपनी साहित्य-साधना की है। इस दिशा में उपन्यास की पाश्चात्य विधा को अपनी कृतियों में पूर्णतया में-संतोषजनक स्वरूप देने में उनके प्रयत्न अपर्याप्त ही रहे हैं। गुजराती साहित्य में उपन्यास-विधा का आरंभ ही ऐतिहासिक उपन्यास से हुआ। इस युग के सभी उप-न्यासों में इतिहास का उपयोग पृष्ठभूमि के रूप में ही किया गया है, वैसे कथावस्तु में प्रधानता सर्वत्र रोमांस की है। अतः ये कृतियां ऐतिहासिक उपन्यास की अपेक्षा ऐतिहासिक रोमांस के अधिक निकट हैं।

नंदशंकर, और महीपत राम ने अपने उपन्यासों के लिए मध्य युगीन गुजरात के ऐतिहासिक पुरुषों को अपने उपन्यासों की कथावस्तु के रूप में ग्रहण किया है। किन्तु युग के अनुरूप वातावरण का निरूपण करने में दोनों सर्वथा विफल रहे हैं। दोनों ने अपने वर्तमान युग का अतीत में चित्रण कर संतोष की अनुभूति की। अतः दोनों की कृतियों में काल-क्रम का दोष विद्यमान है।

श्री तालेयरखान इस दिशा में काल-क्रम के दोष से सर्वथा मुक्त है। उसने नंदशंकर और महीपत राम की भाँति सुदूर अतीत को अपने उपन्यासों की विषय-वस्तु न बना, अपनी स्मृति में स्पष्ट निकटवर्ती १८५७ की पृष्ठभूमि को अपनी कृतियों का आधार बनाया है।

पूर्ववर्ती दोनों लेखकों ने इतिहास के साथ कल्पना का स्वच्छंद प्रयोग किया है। परिणामतः दोनों की कृतियों में कतिपय ऐतिहासिक असंगतियाँ भी उभर आई हैं। श्री तालेयर खान ने अपनी कृतियों में स्वच्छंद कल्पना का प्रयोग तो नहीं किया। किन्तु अपनी ब्रिटिश-भक्ति के व्यामोह में उन्होंने नाना साहब और टीपू सुल्तान के चरित्र-चित्रण में ऐतिहासिक यथार्थता की सर्वथा अवहेलना की है।

समसामयिक जनता में व्याप्त कतिपय अंध-विश्वास और रूढ़ियों के उन्मूलन द्वारा उसका अभ्युत्थान इस युग के लेखकों का मुख्य लक्ष्य रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कहीं उन्होंने इतिहास का प्रयोग किया है, तो कहीं व्यंग्योक्ति और कटु आलोचना का भी।

उपन्यासों के वस्तु-संघटन की ओर इनका ध्यान या तो संभवतया गया ही नहीं अथवा इन्होंने उसकी सर्वथा उपेक्षा की है। कथा में यथा-प्रसंग एवं यथारुचि दीर्घ वर्णनों की बहुलता दृष्टिगोचर होती है जो कथा-शैथिल्य का मुख्य कारण है। चरित्र-चित्रण और कथोपकथन प्रायः इस युग के सभी उपन्यासों में अपनी अविकसित स्थिति में हैं, अतः अप्रभावशाली एवं अनुपयुक्त।

भाषा इन कृतियों में उत्तरोत्तर परिमार्जित और उपन्यास की विधा के अनुकूल संवरती दृष्टिगत होती है। किंतु गद्य-शैली का जो सक्षम स्वरूप " करण

घेलो " में दृष्टिगत होता है, वह अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता । वर्णनों में नंद शंकर की भाषा-शैली में जो चित्रात्मकता की क्षमता है वह अन्यत्र नहीं ।

शिल्प की दृष्टि से इस युग की कृतियों का कल्पना-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में समावेश किया जा सकता है । इनमें भी नंदशंकर का " करण घेलो " बहुत ही लोकप्रिय कृति के श्रेय का भागी रहा है । ऐतिहासिक और कलात्मक न्यूनताओं के उपरांत आज भी यह उपन्यास अपने सजीव वर्णन, सरल भाषा और लेखन-शैली की सरसता के लिए ~~लोकप्रि~~ लोक-प्रिय और महत्त्वशाली है । इसीके कारण नंदशंकर का गुजराती साहित्य में अनुपम महत्त्व है ।

इन उपन्यासों की कथावस्तु का सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य है युग-चेतना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति । लार्ड विलियम बैंटिक के शासन-काल के अंतिम दिनों में मेकाले द्वारा निर्दिष्ट अंग्रेजी शिक्षा-प्रणाली तथा उसके कुछ समय उपरान्त ईसाई धर्म के प्रचार और भारतीय समाज की रूढ़ियों पर होने वाले उनके निरन्तर प्रहारों की प्रतिक्रिया स्वरूप सम्पूर्ण देश में जो सामाजिक सुधार की लहर एक साथ चल पड़ी, उसने हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि भारतीय भाषाओं के साहित्य को अत्यधिक प्रभावित एवं उत्प्रेरित किया । सामाजिक सुधार के कतिपय महत्त्वपूर्ण अभियान थे, सति-प्रथा, बाल-विवाह, अन्ध-विश्वासों तथा निर्मित रूढ़ियों के उन्मूलन का प्रभाव और उसके साथ ही विधवा-विवाह द्वारा अनेक सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों को रोकना ।

विकास युग (१९१६ के अब तक)

इस युग का आरंभ हम श्री कन्हैयालाल माणकलाल मुंशी के ऐतिहासिक उपन्यासों से मानते हैं । उनका सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है " पाटण नी प्रभुता ", जिसका प्रकाशन १९१६ में हुआ । इसके शीघ्र पश्चात् श्री मुंशी ने मध्यकालीन गुजरात

के इतिहास को लक्ष्य में रख कर " गुजरात के नाथ " और " राजाधिराज " की रचना कर पाटण-सम्बन्धी उपन्यासत्रयी की अनुपार भेंट गुजराती साहित्य को दी । उनके अतिरिक्त अन्य कतिपय उपन्यासकारों ने अपने योगदान से इस युग की ऐतिहासिक उपन्यास परंपरा को समृद्ध किया । इस युग के मान्य ऐतिहासिक उपन्यासकारों में हैं , श्री क० मा० मुंशी, श्री धूमकेतु, श्री गुणवंतराय आचार्य, श्री चुनीलाल वर्धमान शाह, श्री मनुभाई पंचोली " दर्शक " इत्यादि ।

ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास और कल्पना के समन्वयात्मक संयोजन के विषय में इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासकार काफी उदारमना-प्रकृति के रहे हैं । उनकी रचनाओं में ऐतिहासिक पात्र, घटना-प्रसंग और वातावरण का निरूपण भी होता है, किन्तु इसके साथ ही उपन्यास की रोमांस युक्त कथावस्तु के साथ उनका इतना लगाव होता है, और इस दिशा में उनकी सर्जनशील कल्पना इतनी क्रियाशील रहती है कि वे ऐतिहासिक पात्रों को और उनके वातावरण को यथातथ्य रूप प्रदान करने की ओर से सर्वथा निर्लिप्त रह जाते हैं । श्री मुंशी के उपन्यासों में, फिर भी, ऐतिहासिकता की मात्रा अपने समुन्नत रूप में विद्यमान है ।

अपनी रचनाओं में प्रयुक्त ऐतिहासिक तथ्य और औपन्यासिक शिल्प के संयोजन के अनुसार इस युग के ऐतिहासिक उपन्यास निम्नांकित रूप में दृष्टिगत होते हैं :

१ विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास : इसके अंतर्गत श्री चुनीलाल वर्धमान शाह के 'कर्मयोगी' 'राजेश्वर' 'राजहत्या' एवं 'रूपमती' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों को ग्रहण किया जा सकता है ।

२ समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यास : श्री मुंशी के पाटण की प्रभुता, गुजरातनो

नाथ, राजाधिराज, पृथिवी वल्लभ आदि। श्री धूमकेतु के चौलादेवी, राज सन्यासी, वाचिनी देवी आदि।

३ वातावरण प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास :
श्री रमणलाल वसंतलाल देसाई का " मारेलो अग्नि "। श्री मनुभाई पंचोली " दर्शक " के " दीप निर्वाण " और " बंधन अने मुक्ति " का भी इसमें समावेश होता है।

४ कल्पना-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास : श्री जयभिक्खु के भगवान ऋषभ देव, काम विजेता स्थूलीभद्र, और चक्रवर्ती भरतदेव, इत्यादि और श्री गुणवंत आचार्य का काल भैरव, दरियालाल आदि इस कोटि के अंतर्गत आते हैं।

विवेच्य युग की रचनाओं में विषय-वस्तु और लक्ष्य की दृष्टि से अवलोकन करने पर निम्नांकित प्रवृत्तियां दृष्टिगोचर होती हैं :-

१ गुजरात और आर्यावर्त के गौरव की प्रतिष्ठापना, श्री मुंशी के पाटण सम्बन्धी तीनों उपन्यासों में, एवं भगवान कौटिल्य में यह स्पष्टतया द्रष्टव्य है।

२ ऐतिहासिक महापुरुषों का चरित्र-चित्रण ; श्री मुंशी का राजाधिराज, भगवान कौटिल्य, श्री चुनीलाल वर्धमान शाह का मूलराज सोलंकी, कर्मयोगी राजेश्वर, गुर्जेश्वर, श्री धूमकेतु के राजसन्यासी, सिद्धराज जयसिंह, त्रिभुवनगंड, जयसिंह सिद्धराज आदि आदि।

३ वैयक्तिक दृष्टिबिंदु से विषय-वस्तु की व्याख्या :-
श्री झवेरचंद कालीदास मेघाणी के " समरांगण ", और " रा " गंगानलियो " श्री गुणवंत आचार्य के " इन्कलाब " " देश-दीवान " और "विराट जागे छे त्यारे "

आदि उपन्यासों में क्रमशः मनोविश्लेषणात्मक और जनवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होते हैं ।

विवेच्य युग के इस संक्षिप्त और सामान्य परिचय के पश्चात् इसके ऐतिहासिक उपन्यासकारों की स्व- रचनाओं और उनके शिल्प के विषय में परिचयात्मक विवेचन प्रस्तुत करेंगे ।

श्री क० मा० मुंशी :

गुजराती ऐतिहासिक उपन्यास की आरम्भिक अवस्था के निष्कर्ष में हम इंगित कर आये हैं कि किस प्रकार तत्कालीन उपन्यास वर्णन और विचार बाहुल्य के कारण शिथिल और गतिहीन कथावस्तु, अप्रभावशाली चरित्र-चित्रण, अनुपयुक्त कथोपकथन एवं वातावरण के निरूपण में कुशलता के अभाव के कारण औपन्यासिक विधा की उपलब्धि से दूर था । प्रयोगावस्था के इन उपन्यासों में इतिहास केवल पृष्ठभूमि के रूप में प्रयुक्त किया गया है । इस ऐतिहासिक आधार के अतिरिक्त शेष, उपन्यास का कलेवर केवल कल्पनाश्रित है । इस प्रकार कल्पनाधिक्य के कारण ये आरंभिक युग के ऐतिहासिक उपन्यास रोमांस पूर्ण ऐति० उपन्यास की सर्व साधारण स्थिति से आगे नहीं बढ़ पाये थे ।[1] श्री क० मा० मुंशी ने इसे देखा और उन्होंने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में उसे समुन्नत स्वरूप प्रदान किया । इस दिशा में एक ओर उन्होंने अपने इतिहास के अध्ययन के सहारे इतिहास और सम्भाव्य कल्पना का समन्वय संयोजित किया तो दूसरी ओर उसे एक यथार्थ और आकर्षक स्वरूप भी प्रदान किया । इस प्रकार श्री मुंशी के हाथों गुजराती ऐतिहासिक उपन्यास को अपना वास्तविक स्वरूप प्राप्त हुआ । इसीने उन्हें

1 डा० आर० आई० पटेल, हिस्ट्री आफ गुजराती नावेल, पृ० २८१

गुजराती साहित्य में श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यासकार का गौरव प्रदान किया है । आपके ऐतिहासिक उपन्यास निम्नांकित हैं ।

(१) पाटण नी प्रभुता (१९१६) (२) गुजरातनो नाथ (१९१८-१९)
(३) राजाधिराज (१९२२-२३) (४) पृथ्वीवल्लभ (१९२०-२९)
(५) भगवान कौटिल्य (१९२४-२५)(६) जय सोमनाथ (१९४०) आदि ।

उपर्युक्त ऐतिहासिक उपन्यासों में से प्रथम तीन, गुजरात के हिन्दू महाराजा जयसिंह सोलंकी के राज्य से सम्बन्धित हैं । इसमें महान कूटनीतिज्ञ मुंजाल के नेतृत्व और निर्देशन के अनुसार गुजरात की राष्ट्रीय एकता की उपलब्धि और उसका स्थिरीकरण लेखक का राजकीय लक्ष्य है और इसी की पृष्ठभूमि में इन उपन्यासों के कतिपय ऐतिहासिक और काल्पनिक पात्रों के वैयक्तिक स्वार्थ, उनकी महत्वाकांक्षाएं, उनके पारस्परिक प्रेम और घृणा के व्यापार आदि की इनमें सक्षम अभिव्यक्ति हुई है । इन तीनों में श्री मुंशी ने गुजरात के अतीत कालीन गौरव और उसकी एकता की अंततः विजय निरूपित करते हुए प्रेम और युद्ध एवं वैयक्तिक और सामुदायिक जीवन को, इतिहास, रोमांस और नाटकीयता के संयोजन द्वारा सुंदर रूप में प्रस्तुत कर वस्तु नियोजन में अपने कौशल का अद्भुत परिचय दिया है ।

" पृथ्वीवल्लभ " मुंशी जी की एक अनुपम उपलब्धि है । तैलंगण युद्ध में पराजित और बंदी अवंतीराज मुंज के अंतिम भव्य और उदात्त जीवन से इसकी कथावस्तु सम्बन्धित है । इसमें मुंज और मृणाल के अन्तर्द्वन्द्व के निरूपण द्वारा लेखक ने अपने यौवनकालीन जीवन के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति की है ।[1] " भगवान

१ डा० आर० आई० पटेल, हिस्टरी आफ गुजरात नावेल्स, पृ० २५२

कौटिल्य " में श्री मुंशी ने अपने आदर्श राजनयिक विष्णुगुप्त का चरित्र-चित्रण किया है। " जय सोमनाथ " कतिपय न्यूनताओं के उपरांत भी श्री मुंशी का एक समृद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें सोमनाथ पर महमूद की सेनाओं के आक्रमण से गुजरात के राजपूत युवराज भीमदेव द्वारा उसकी रक्षार्थ किये हुए ऐतिहासिक युद्ध का निरूपण है।

श्री मुंशी की कृतियों का वस्तुगत परिचय प्राप्त कर लेने के बाद उनके ऐतिहासिक उपन्यास गत शिल्प पर सामग्रिक विचार करना वांछनीय होगा। मुंशी जी स्वयं इतिहासकार हैं, किन्तु अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में वे ऐतिहासिक तथ्यों के परिवर्तन की स्वतंत्रता के समर्थक हैं। उन्होंने इतिहास का अध्ययन ही अपने मनोनुरूप नायक और वीर पुरुषों के स्वरूप की शोध के लिये किया है। अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के मध्य पुरुष उन्हें गुजरात, मालवा, मगध, और आर्यावर्त के इतिहास से प्राप्त हुए हैं। मुंजाल, मुंज और भगवान कौटिल्य आदि ऐसे ही महापुरुष हैं, जिन्हें लेखक ने अपने आदर्शानुरूप चित्रित किया है।

शिल्प की दृष्टि से श्री मुंशी के उपन्यासों का कथावस्तु एक सुगठित कथानक के रूप में मिलता है। उनकी प्रभावोत्पादकता के लिए लेखक ने उनके कथावस्तु, नाटकीयता, वस्तु-वर्णन और विचार-निदर्शन आदि में सदैव एक संतुलन रखा है। इससे इनकी कृतियाँ काफी मनोरंजक और आकर्षक बन पडी हैं। श्री मुंशी की पात्र-सृष्टि इससे भी प्रभावशाली और आकर्षक है। उनके पात्र इतने अद्भुत व्यक्तित्व के धनी आकर्षक और प्रतापी हैं कि पाठक के मानस-पटल पर चिरकाल तक अंकित रहते हैं। वास्तव में इस अद्भुत पात्र सृष्टि में ही उनके सर्जन का सामर्थ्य दीप उठा है। अपने उपन्यासों को आकर्षक बनाने के लिए उन्होंने कथोपकथन का बहुत ही सम्यक् उपयोग किया है। इनसे कथावस्तु का यथावश्यक गति भी मिलती है और पात्रों के चारित्रिक विकास में उनका श्री मुंशी ने सुंदर उपयोग किया है। वातावरण के

निरूपण में श्री मुंशी विशेष ध्यान नहीं दे पाये । उसकी अभिव्यक्ति उन्होंने स्थूल रेखाकृतियों मात्र से की है । फिर भी " जय सोमनाथ " में युद्ध का वातावरण काफी यथार्थ रूप में निरूपित हुआ है । लेखक की भाषा-शैली नाटकीयता के लिए हुए है, उसकी संक्षिप्तता, चपलता और रमणीयता प्रशंसनीय है । इस प्रकार शिल्प की दृष्टि से उनके ऐतिहासिक उपन्यास समस्त गुजराती साहित्य में उत्कृष्ट स्थान के अधिकारी हैं ।

वरिष्ठता की दृष्टि से श्री मुंशी के ऐतिहासिक उपन्यासों को समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यासों के वर्ग में रखा जा सकता है उनमें उल्लेखनीय हैं :-

(१) पाटण नी प्रभुता, (२) गुजरात नो नाथ, (३) राजाधिराज और (४) जय सोमनाथ, (५) पृथ्वी वल्लभ, (६) भगवान कौटिल्य, (७) भग्न पादुका आदि ।

आपके इन उपन्यासों में से भी " गुजरात नो नाथ ", " पृथ्वी वल्लभ " और " जय सोमनाथ " मुंशीजी के सर्वाधिक लोकप्रिय और श्रेष्ठ उपन्यासों की कोटि में मान्य हैं ।

श्री मुंशी के ऐतिहासिक उपन्यासों की लोकप्रियता का मूल आधार है उनकी भव्य और प्रतापी पात्र-सृष्टि । मुंजाल और कौटिल्य, काक और मंजरी, चौला और भीमदेव, और मुंज ऐसे ही पात्र हैं, जो पाठक को सदैव आंदोलित करते रहते हैं । इनमें से प्रत्येक अपनी प्रकृति के अनुसार लेखक के राष्ट्रीय, राजनीतिक, नैतिक, आध्यात्मिक, और मानवीय विचारों और आदर्शों की अभिव्यक्ति में लीन दृष्टिगोचर होता है । आपके ये पात्र वर्गगत नहीं, अपितु वैयक्तिक हैं ।

श्री मुंशी के मतानुसार प्रेम जीवन की विधायिका शक्ति है ।[1] उनके

1. Munshi and his art ~~His~~ Works. Vol. III, J.H. Dave and others P. 39

प्रेमी-युगलों के जीवन की सभी गतिविधियां इसी प्रेम से स्पंदित और संचालित होती हैं। उनका यह प्रेम दार्शनिक प्रेम नहीं, अपितु इस धरा का प्रेम है, पूर्णतया मांसल और रोमांस पूर्ण प्रेम, जिसकी तीव्रानुभूति द्वारा उनके प्रेमी-युगलों की परस्पर पूरक आत्माएं पूर्णता प्राप्त करती निरूपित की गई हैं।

संक्षेप में, श्री मुंशी ने ऐतिहासिक उपन्यास को अपना वास्तविक स्वरूप प्रदान किया है। अपने सुगठित कथावस्तु, भव्य, और प्रतापी पात्र-सृष्टि, अद्भुत, रोमांस एवं नाट्यात्मकता के संयोजन ने इनके उपन्यासों को समस्त गुजराती साहित्य में उत्कृष्ट स्थान का अधिकारी बनाया है। इन्हीं के आधार पर श्री क० मा० मुंशी श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं गुजराती साहित्य में युग पुरुष के गौरव के धनी हैं। इनके कृतित्व से प्रभावित हो परवर्ती उपन्यासकारों में भी ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा और भी प्रवहमान होती रही है।

२ चुनीलाल वर्धमान शाह : (१८८७ – १९४४)

श्री चुनीलाल पहले एक पत्रकार हैं, और बाद में उपन्यासकार। पत्रकार के रूप में जनता के विविध क्षेत्रीय जीवन से और समसामयिक विचारों के आंदोलन उनका निकट का परिचय रहा है। इस अन्वेक्षण ने उन्हें उपन्यास लेखन लए प्रेरित किया। अपने युग में होने वाले गुजरात के इतिहास सम्बन्धी शोधकार्य से भी वे सर्वथा परिचित रहे हैं। इनके ऐतिहासिक उपन्यासों मुं यथाशक्य ऐतिहासिक तथ्यों की सुरक्षा का प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है। किंतु घटना-प्रसंगों और पात्रों के चारित्रिक विकास के निरूपण में मनोविज्ञान का इन्होंने समुचित प्रयोग किया है। एक विशेष बात जो श्री चुनीलाल शाह के ऐतिहासिक उपन्यासों में दृष्टिगत होती है वह यह है कि इनकी रचनाओं में इनका कोई दार्शनिक मत या

प्रचारवादी दृष्टिकोण नहीं है। इन्होंने साहित्य को एक विशाल मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति के रूप में ग्रहण किया है।

आपकी कृतियाँ निम्नांकित हैं :-

(१) सोमनाथ नुं शिवलिंग (१९१२), (२) गुजरात नी गर्जना (१९१७)
(३) पाटणना पतननो प्रारंभ (१९१९), (४) मूलराज सोलंकी (१९२०)

ये कृतियाँ अपने समय में सर्वथा लोक प्रिय ऐतिहासिक कथाओं में लेखक की अभिरुचि व्यक्त करती हैं। कुछ एक अनुवादों के बाद पुनः उनकी कृतियाँ निम्नांकित रूप में अस्तित्व में आईं।

(१) ज्योत अने ज्वाला (१९२२), (२) कर्मयोगी राजेश्वर (१९२५),
(३) राजहत्या (१९३७), (४) अवंतीनाथ (१९३९),
(५) रूपमति (१९५१), (६) नीलकंठनुं बाण (१९४४),
(७) तपोवन (१९४६), (८) गुर्जरेश्वर (१९४९)।

उपर्युक्त कृतियों में से " ज्योत अने ज्वाला " मध्यकालीन गुजरात और राजस्थान की सामंती पृष्ठभूमि में निरूपित प्रेम, साहस और वीरतापूर्ण एक सुंदर रोमांस कथा है। " कर्मयोगी राजेश्वर " गुजरात में सोलंकी वंश के संस्थापक मूलराज के अंतिम जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है। " राजहत्या " इसी वंश के असमर्थ और क्रूर राजा " अजयपाल " की हत्या पर आश्रित है। अवंतीनाथ में अवंती नरेश भोज, तथा " रूपमती " में रूपमती और बाज-बहादुर की कथावस्तु है। नीलकंठ नुं बाण भी शाह का एक उत्तम ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें गुजरात के राजा चामुण्ड के, अपनी रानी के निधन के उपरांत, जीवन के अंतिम वर्षों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

श्री चूनीलाल शाह की कृतियाँ प्रायः रोमांस युक्त हैं। अपने उपन्यासों की कथा-वस्तु को संघटित करने के लिए वे काफी प्रयत्नशील हैं। अतः सुगठित कथानक इनके उपन्यासों की एक विशेषता है। इनके ~~सर्जनात्मक कल्पना का~~ उपन्यास अपने ऐतिहासिक पात्रों के मनोवैज्ञानिक निरूपण के लिए प्रसिद्ध हैं। अपने पात्रों को इन्होंने मानवीय प्रकृति का अवलोकन करने वाले और विशद् मनोवैज्ञानिक सूझ प्रस्तुत करने वाले पात्रों के रूप में चित्रित किया है। श्री चूनीलाल इतिवृत्तात्मक शैली के कथाकार हैं। अतः इनके पात्रों को मुखर हो अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए कोई अवकाश की प्राप्ति नहीं हुई। परिणामतः संवाद इनके उपन्यासों में एक निर्बल तत्त्व है। वातावरण के निरूपण में लेखक अपनी व्यापक कुशलता अभिव्यक्त नहीं करता। भाषा-शैली सर्वथा सरल, रोचक और प्रवहमान है।

इनके उपन्यास " विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास " एवं " समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यास " की कोटि में रखे जा सकते हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि श्री चूनीलाल व० शाह प्रथम पत्रकार और बाद में उपन्यासकार। अतः इनकी कृतियों में मौलिक कलाकार की प्रतिभा पर पत्रकार हावी रहता दृष्टिगत होता।

उपर्युक्त कतिपय कृतियों के उपरांत भी श्री चूनीलाल ने गुजराती ऐतिहासिक उपन्यास परंपरा को काफी योगदान दिया है। इससे वहाँ उनका महत्त्व पूर्ण स्थान है। पाठकों में इनकी लोकप्रियता भी इसकी सूचक है।

१ श्री गौरीशंकर गोवर्धनराम जोशी " धूमकेतु " (१८९२-१९६२) :

ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में आने से पूर्व श्री धूमकेतु गुजराती साहित्य के एक विख्यात कहानीकार थे। कहानी में रोमांस का निरूपण इनका प्रिय विषय रहा है। इसकी तीव्रानुभूति को व्यापक रूप में अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने उपन्यास को अपनाया। किन्तु सामाजिक उपन्यास उन्हें अपने अभियान में

सन्तुष्ट नहीं कर सका । अतः अंततो गत्वा ऐतिहासिक उपन्यास उन्हें मनोनुकूल लगा । यहां उन्होंने गौरवशाली गुजरात के चौलुक्य वंश पर दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे । रोमांस की इस अदम्य भावना ने इन्हें गुप्त-वंशावली ", तथा अवंती, और मगध के राज्यवंशों के सम्बन्ध में भी कितने ही उपन्यासों की रचना के लिए प्रेरित किया । परिणामतः श्री धूमकेतु के ऐतिहासिक उपन्यासों की सृष्टि विपुल मात्रा में विद्यमान है । आपकी कृतियां निम्नांकित हैं :-

(१) गुर्जरेश्वर, (२) राजर्षि कुमार पाल, (३) प्रियदर्शी अशोक,
(४) प्रि०सम्राट अशोक, (५) अवंतीनाथ, (६) जयसिंह सिद्धराज,
(७) त्रिभुवन गंड, (८) बर्बरक जिष्णु , (९) वाचिनी देवी,
(१०) नायिका देवी, (११) महाराणी कुमार देवी, (१२) महामात्य चाणक्य,
(१३) राजकन्या, (१४) कर्णावती, (१५) मगध सेनापति,
(१६) चौलादेवी, (१७) चंद्रगुप्त मौर्य, (१८) सम्राट चंद्रगुप्त,
(१९) रायकरण घेलो, (२०) राज सन्यासी, (२१) अजित भीमदेव,
(२२) मगधपति, (२३) आम्रपाली, (२४) नगरी वैशाली,
(२५) सेनापति पुष्यमित्र, (२६) महाराणी कुमार देवी, (२७) महाराणी कुमार देवी
भाग -१ भाग-२

इत्यादि ।

उपर्युक्त ऐतिहासिक उपन्यासों में श्री धूमकेतु का आग्रह इतिहास की अपेक्षा रोमांस पर अधिक परिलक्षित होता है । उनका इतिहास सम्बन्धी अध्ययन भी पर्याप्त रहा है । चौलुक्य वंशावली को रोमांस माला के रूप में साहित्यिक स्वरूप देने के लिए तत्सम्बन्धी सम-सामयिक सामग्री का आपने काफी अध्ययन किया है ।[1] इस

१ डा० आर० आई० पटेल, हिस्ट्री आफ् गुजराती नावेल्स, पृ० ५१२

दिशा में उन्होंने कतिपय जन-श्रुतियों और लोक-कथाओं का भी आधार लिया है। इस प्रकार इनकी कृतियों में इतिहास के साथ कल्पना का उन्मुक्त प्रयोग हुआ है।

श्री धूमकेतु के उपन्यास देश भक्ति की भावना से प्रेरित रहे हैं। भारतीय अतीत को अपने गौरवान्वित रूप में प्रस्तुत करना यह इनकी कृतियों का मुख्य लक्ष्य है। चौलुक्य वंशावली से सम्बन्धित उपन्यासों में चौलुक्य शासन को नैतिक और राजनीतिक आदर्शों से सम्पन्न समुन्नत स्थिति में निरूपित करने की उनकी चेष्टा स्पष्ट दृष्टिगत होती है।

शिल्प की दृष्टि से आपके ऐतिहासिक उपन्यासों के कथावस्तु विपुल घटना-प्रसंगों से ग्रथित होते हैं। इनके द्वारा लेखक पाठकों में कुतूहल उत्पन्न कर उनका मनोरंजन करता रहता है। कई स्थलों पर अद्भुत चमत्कारों की ऐसी घटनाएं, जिनका इतिहास में कोई स्थान नहीं, भी आती हैं, इनका कौतूहल वृत्ति के परितोष की दृष्टि से भले ही महत्त्व हो, किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास के सन्दर्भ में इसे निश्चय ही अनुपयुक्त कहा जायगा। चौला और भुवनेश्वरी जैसे पात्रों को विचार और आदर्शों के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है, किन्तु उनका प्रभाव पाठक पर चिरस्थायी नहीं रहता। जयसिंह, दामोदर मेहता, और केसर मकवाना, जैसे ~~[illegible]~~ पात्रों का चरित्र-चित्रण भी अच्छा बन पडा है। सामान्यतया श्री धूमकेतु अपने पात्रों को उनके कथोपकथन में जीवंत स्वरूप नहीं दे सके। इसका कारण है, उनमें नाटकीय कुशलता का अभाव। किन्तु काठियावाडी बोली बोलनेवाले पात्रों में उन्होंने इस बोली-विशेष का सुंदर प्रयोग किया है। " वाचिनी देवी " का जेहल, " रा'नवघण, रा'खेंगार और देवुभा (जयसिंह सिद्धराज, और त्रिभुवन गंड जयसिंह) पाठक के मन पर अपनी वाणी और अपने व्यक्तित्व की अनोखी छाप छोड जाते हैं। वातावरण के निरूपण में उनके प्रयत्न रोमांस के अनुरूप ही परिलक्षित होते हैं। श्री धूमकेतु की भाषा एक सुंदर आलंकारिक गद्य से युक्त और स्वप्निल कल्पना को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में समर्थ दृष्टिगोचर होती

है ।

ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में श्री धूमकेतु मुंशीजी से काफी प्रभावित हैं । श्री धूमकेतु ने उसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उपयोग किया है, जिस पर श्री मुंशी अंशतः पहले ही कार्य कर चुके हैं । उन्होंने मुंशीजी से चरित्र, घटना-प्रसंग और वातावरण आदि के विषय में बहुत ग्रहण किया है, फिर भी दोनों की तुलना का कोई उपयुक्त आधार नहीं । श्री धूमकेतु की साहित्यिक प्रतिभा गीत्यात्मक है, जबकि श्री मुंशी नाट्यात्मक प्रतिभा के धनी हैं । "[1]

वरिष्ठता में श्री धूमकेतु के उपन्यास यद्यपि मुंशी जी की कोटि के नहीं हैं, तथापि वे काफी लोकप्रिय रहे हैं । गुजराती साहित्य के क्षेत्र में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है । इनके उपन्यासों में से कतिपय का तो अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है । वास्तव में गुजराती ऐतिहासिक उपन्यासों के क्षेत्र में श्री धूमकेतु का योगदान ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ।

४ श्री गुणवंतराय आचार्य : (१९०२ से १९६४)

श्री गुणवंत आचार्य एक कुशल उपन्यासकार हैं साहित्य और कला में वे मानव जीवन की उपयोगिता के समर्थक हैं । अपने साहित्य-सर्जन में मानवता और न्याय की विजय सदैव उनके लक्ष्य में रहा है । उन पर गांधीवाद, समाजवाद और उदारतावाद का प्रचुर प्रभाव है ।[2]

१

२ डा० आर० आई० पटेल, हिस्ट्री आफ गुजराती नावेल्स, पृ० १००

अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में वे ऐतिहासिक सामग्री के साथ अपनी कल्पना के सहारे जन-श्रुतियों का भी सम्यक् उपयोग करते हैं। अपने वर्तमान से अतीत में प्रयाण करते समय भी उनका मानवीय-श्रेष्ठता और न्याय की विजय का विश्वास उनके साथ सक्रिय रहता है। इससे कतिपय स्थानों पर उनके उपन्यासों में काल-क्रम दोष आ गया है। गुजरात और सौराष्ट्र के इतिहास का उनका विश्लेषण उनके लोक-तंत्रीय शासन और लोगों में उनके राजनीतिक विश्वास से आच्छादित है। यह इनकी कृतियों के अध्ययन से स्पष्ट है।

आपकी कृतियां निम्नांकित हैं :-

(१) इन्कलाब,	(२) देश दीवान,	(३) विराज जागे छे त्यारे,
(४) जगतना मंदिरमां,	(५) काल भैरव,	(६) श्रीधर मेहता,
(७) कराल काल जागे,	(८) सोरठनी संध्या,	(९) मीना बाजार,
(१०) सर्वेश्वर,	(११) गिरनारने खोळे,	(१२) वेश्यानुं [illegible], झवेरात,
(१३) गुर्जर लक्ष्मी,	(१४) राय हरिहर,	(१५) महाबलिदान,
(१६) सेनापति,	(१७) जाम तमाची पूर्वार्द्ध - उत्तरार्द्ध।	
(१८) मुसाफिर,	(१९) बंडखोर,	(२०) वतन नो साद। आदि।

आपकी उपर्युक्त कृतियों के सामान्य अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उनका कथावस्तु अपनी सहज गति से अग्रसर होता रहता है। श्री गुणवंतराय उनके कथानक में घटना-प्रसंगों का इस प्रकार आयोजन करते हैं कि वे पाठक को उपन्यास में तल्लीन बनाये रखते हैं और उसे कथा की गति के साथ आल्हादित करते रहते हैं। अपनी कल्पना शक्ति के सहारे पात्रों का जीवंत चरित्र-चित्रण प्रस्तुत करने में भी वे प्रायः सफल हैं। स्थिर और विकसनशील पात्रों के चारित्रिक-विकास में उनकी कुशलता वस्तुतः सराहनीय है। इनके उपन्यासों में कथोपकथन भी अपने समीचीन रूप में प्रयुक्त है। इस दिशा में प्रयुक्त उनके संवाद पात्रों और परिस्थितियों की

समुचित अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। श्री गुणवंतराय ने अपने उपन्यासों में प्रधानतया इतिवृत्तात्मक शैली का प्रयोग किया है। अपनी कल्पनात्मक वर्णन-शक्ति के सहारे इसी शैली में वस्तु-निरूपण करते चले जाते हैं और पाठक के कल्पना-जगत् में यथास्थिति एक सुंदर वातावरण का निर्माण कर देते हैं। इनकी भाषा काफी सरल और प्रवहमान है। पात्रों के बाह्य और आभ्यंतरिक चित्रण में एवं घटना-प्रसंगों के आलेखन में वह सक्षम है। शैली, कहीं आलंकारिक, कहीं भावना-प्रधान तो कहीं इतिवृत्तात्मक, इस प्रकार पात्र, प्रसंग और परिस्थिति के अनुरूप सजती संवरती दृष्टिगत होती है।

इनके ऐतिहासिक उपन्यास राष्ट्रीय-स्वातंत्र्य, लोक-तंत्र, लोक-कल्याण, और विश्व-शांति के आदर्शों से प्रेरित हैं। उत्कृष्ट और वीरोचित भावनाओं की उनमें सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। इससे गुजराती साहित्य में इनके उपन्यासों का काफी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

श्री झवेरचंद कालीदास मेघाणी : (१८९७-१९४७)

श्री मेघाणी स्वयं इतिहास के एक अच्छे विद्वान और इतिहासकार थे। लोक साहित्य के लेखक के रूप में इनके समक्ष ऐसी विपुल सामग्री आई, जिसने इन्हें ऐतिहासिक उपन्यास के लेखन-कार्य की ओर प्रेरित किया। " समरांगण " इनका प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें इतिहास के प्रति लेखक का एक नया ही दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। वह इतिहास की ओर गौरव और महानता के लिए अभिमुख नहीं होता, अपितु वर्तमान सी अच्छाई और बुराई से मिश्रित मानव प्रकृति की इतिहास में शोध कर उसके निरूपण द्वारा जीवन आदर्श और यथार्थ की अभिव्यक्ति उसका मुख्य लक्ष्य है।

गुजरात के अन्य उपन्यासकारों की भांति श्री मेघाणी भी रोमांस और आदर्श के प्रति गहरी रुचि रखते हैं। अपने उपन्यासों में रोमांस और यथार्थ की स्थापना करने में वे अपने समसामयिक उपन्यासकारों में अग्रगण्य हैं।[1] आपके ऐतिहासिक

१ डा० आर० आई० पटेल, हिस्ट्री आफ गुजराती नावेल्स, पृ० ४७१

उपन्यास निम्नांकित हैं :-

(१) समरांगण (१९३८), (२) रा'गंगा जडियो (१९३९),
(३) गुजरातनो जय भाग-१ (१९४०) भाग-२ (१९४२) आदि ।

अपने उपन्यासों की कथावस्तु को एक सुग्रथित कथानक के रूप में प्रस्तुत करने में श्री मेघाणी बहुत ही कुशल हैं । उपन्यास की समाप्ति तक पाठक को मुग्ध कर अपनी रचना में उसे तल्लीन रखते हैं । पात्रों के सहज चित्रण में भी श्री मेघाणी काफी समर्थ हैं । उनकी आकृति-प्रकृति और विशिष्टताओं का अंकन करने में इतने कुशल हस्त हैं कि वे शीघ्र ही पाठकों के मानस पटल पर स्पष्टतया उभर आते हैं । उनकी भाषा में सोरठी बोली की मधुरता, सरलता और ओजस्विता है, जो उनके पात्रों के उन्मुक्त कथोपकथन एवं विषय-वस्तु के वर्णन में परिलक्षित होती है । श्री मेघाणी सर्व प्रथम लोक-साहित्य के प्रणेता हैं और बाद में उपन्यासकार । अतः आपकी भाषा-शैली सर्वथा लोक भोग्य है ।

श्री मेघाणी गुजरात के सर्व प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में आंचलिकता को स्थान दिया । सौराष्ट्र का समृद्ध अतीत कालीन जीवन उनके उपन्यासों में मुखर हो उठा है । यह प्रादेशिकता उनके उपन्यासों को एक विशेष आंतरिक रागात्मकता और महत्त्व प्रदान करती है, जो बाह्य जीवन को लक्ष्य में रख कर लिखे जाने वाले उपन्यासों में नहीं मिलती ।

अपनी इस उपर्युक्त विशेषता से सम्पन्न एवं रंजनात्मक और प्रवाहशील शैली में लिखी इनकी रचनाओं का गुजराती साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है और यद्यपि श्री मेघाणी के ऐतिहासिक उपन्यास संख्या में कम हैं, फिर भी ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में उनका स्थान भी मुंशी और धूमकेतु के समकक्ष ही है ।

श्री बाला भाई वीरचंद देसाई उर्फ " जयभिक्खु ":(१९०८-१९७०)

श्री जयभिक्खु स्वर्गी गुणवंतराय और चुनीलाल की साहित्यिक परंपरा के हैं। ऐतिहासिक उपन्यास के विषय-वस्तु और शिल्प के सम्बन्ध में आपने उन्हीं के प्राचीन आदर्शों का अनुसरण किया है। आपके ऐतिहासिक उपन्यास निम्नांकित हैं :-

(१) विक्रमादित्य हेमु, (२) दिल्लीश्वर, (३) कामविजेता स्थूलभद्र, (४) नरकेसरी या नरकेश्वरी, (५) भगवान ऋषभदेव, (६) चक्रवर्ती भरतदेव, (७) राजविद्रोह आदि आदि।

श्री जयभिक्खु गुजरात के पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने जैन-धर्म-कथा-साहित्य में से कथावस्तु ग्रहण कर उसे सर्वजन भोग्य उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया है।[1] उनके उपन्यास मानव वृत्तियों के संघर्षों से पूर्ण, रोचक और जीवंत कथावस्तु से युक्त होते हैं। उनकी पात्र-सृष्टि भी समर्थ, वैविध्यपूर्ण और मनोरम है। पात्रों के चरित्र-चित्रण में उनकी चित्रात्मक शैली का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आपकी भाषा-शैली संस्कृत निष्ठ और आलंकारिक है। फिर भी सरलता और सरसता उसके विशिष्ट गुण हैं।

श्री जयभिक्खु के उपन्यासों में यद्यपि स्वर्गी मुंशी धूमकेतु और गुणवंतराय की सी कला की उत्कृष्टता विद्यमान नहीं है, तथापि गुजराती साहित्य में उनका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है। श्री जयभिक्खु प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यासकारों की पीढी के अंतिम प्रतिनिधि हैं।

१ डा० धीरुभाई ठाकर, अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा, पृ० २८१

उपर्युक्त उपन्यासकारों के अतिरिक्त श्री रमणलाल वसंतलाल का " मारेलो अग्नि ", " दर्शक " उपनाम धारी श्री मनुभाई पंचोली के " दीपनिर्वाण " और " बंधन अने मुक्ति " एवं श्री चुनीलाल मडिया का " कंकु ने आरसी " आदि ऐतिहासिक उपन्यास भी उल्लेखनीय हैं। श्री रमणलाल वसन्तलाल देसाई ने " मारेलो अग्नि " में १८५७ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिका में अहिंसा और प्रेम द्वारा घृणा और द्वेष पर विजय प्राप्त करने के गांधीवादी सिद्धान्त का निरूपण किया है। " दीप निर्वाण " ~~और " बंधन अने मुक्ति~~ " में श्री दर्शक ने बौद्धकालीन धर्म और सांस्कृतिक चिंतन को मूर्त स्वरूप देने का सुंदर और सफल प्रयत्न किया है। श्री मडियाजी का " कंकु ने आरसी " चोला की कथावस्तु पर आधारित एक सुंदर ऐतिहासिक उपन्यास है।

निष्कर्ष :
oooooooo

विकास युगीन गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों का समग्रतया अध्ययन करने पर हमें निम्नांकित तथ्यों की उपलब्धि होती है।

(१) विवेच्य युग के ऐतिहासिक उपन्यासकार इतिहास के प्रति काफी उदार दृष्टिकोण वाले रहे हैं। अतः उनकी कृतियों में कल्पना का प्रचुर प्रयोग है। परिणामतः विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में रखे जा सकने योग्य बहुत ही स्वल्प कृतियां दृष्टिगोचर होती हैं।

(२) इस युग के उपन्यासकार अपनी कृतियों में इतिहास की अपेक्षा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत रोमांस पूर्ण कथावस्तु की ओर विशेष रूप से आकर्षित रहे हैं। अतः उनकी कृतियां विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास की अपेक्षा सुंदर और रोचक ऐतिहासिक रोमांस ही हैं।

(३) मुख्यतया गुजरात का मध्यकालीन इतिहास इस युग के उपन्यासकारों की रचनाओं का प्रिय विषय रहा है। अवंती और मगध के राज्यवंशों के इतिहास का भी कतिपय उपन्यासों में आधार लिया गया है। प्रादेशिकता की दृष्टि से गुजरात (पाटण), सौराष्ट्र (जूनागढ़ - सोरठ), मालवा (अवंती) और मगध का भूभिभाग अपनी विशिष्टताओं के साथ इन कृतियों में अंकित हुआ है :-

(४) रचना-उद्देश्य की दृष्टि से इस युग के उपन्यासकारों की रचनाओं के निम्नांकित लक्ष्य रहे हैं।

(अ) आर्य संस्कृति और मध्यकालीन गुजरात के गौरव की प्रतिष्ठापना।

(ब) वीर ऐतिहासिक पुरुषों के चरित्र-चित्रण द्वारा राष्ट्रीय गौरव की भावना का उन्मेष।

(क) अतीत की पृष्ठभूमि का में लोकतंत्र द्वारा लोक-कल्याण के विश्वास की अभिव्यक्ति।

(ड) ऐतिहासिक पात्रों और प्रसंगों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या।

(च) और यथार्थ मानवीय-प्रकृति का विश्लेषण कर लोक-मानस का उदात्तीकरण।

(५) श्री मुंशी से लेकर श्री जयभिक्षु तक गुजराती साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रचुर सर्जन हुआ है। उपन्यास के क्षेत्र में यह युग मुख्यतया ऐतिहासिक उपन्यासों का युग रहा है।

(६) इनमें ऐतिहासिक उपन्यास की कला की दृष्टि से श्री क० मा० मुंशी सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। प्रभावात्मकता की दृष्टि से श्री मुंशी युग पुरुष हैं। ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में इनके द्वारा प्रवर्तित ऐतिहासिक काल, प्रदेश, और ऐतिहासिक उपन्यास की कला के स्वरूप का परवर्ती सभी उपन्यासकारों ने अनुसरण किया है।

(७) विवेच्य युग के सर्वाधिक लोक प्रिय और श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यास निम्नांकित हैं। श्री मुंशी के " पाटणनी प्रभुता ", " गुजरात नो नाथ ", " राजाधिराज ", " पृथ्वी वल्लभ "; श्री धूमकेतु के चौलादेवी, अवंतीनाथ, त्रिभुवन गंड, और राजर्षि कुमार पाल आदि ; श्री चुनी लाल व० शाह के कर्मयोगी राजेश्वर, अवंतीनाथ, और रूपमती आदि, श्री गुणवंतराय आचार्य के देश-दीवान, नगत ना मंदिरमां " आदि श्री मेघाणी का समरांगण एवं श्री दर्शक के दीप निर्वाण और " बंधन अने मुक्ति "। इन रचनाओं ने गुजरात की जनता को एक ओर गुजरात के गौरव और उसके सांस्कृतिक आदर्शों से परिचित किया है, तो दूसरी ओर उसे जीवनोपयोगी समृद्ध संस्कार-सम्बल भी प्रदान किया है।

(८) गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा आज क्षीणप्रायः हो चली है। तथापि गुजराती साहित्य में उसका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है और है उसमें भावी पीढियों को अपने राष्ट्रीय और राजनीतिक आदर्शों से जीवनोपयोगी संस्कार-सम्बल प्रदान करने की क्षमता।

हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्पराओं का संक्षिप्त विहंगावलोकन :

: लार्ड बेंटिक के शासन-काल में मैकाले की शिक्षा और इसाई-धर्म के प्रचार-प्रसार एवं तत्कालीन हिन्दू-समाज की आलोचना की प्रतिक्रिया स्वरूप जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं समाज-सुधार की लहर सम्पूर्ण भारत में व्याप्त हो चली उसने, हिन्दी और गुजराती दोनों ही भाषाओं के साहित्य को प्रभावित किया। परिणामतः हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासकारों ने एक ओर अंग्रेज लेखकों Mr. Scott Mr. Lytten, A. Duma और प्रभृति की साहित्यिक कृतियों के अध्ययन-मनन द्वारा कथा-साहित्य की इस विधा का परिचय-प्राप्त किया, तो दूसरी ओर उसने माध्यम से समाज की विघातक रूढियों के उन्मूलनार्थ सुधारवादी आंदोलन

आरंभ किये । आरम्भिक युग की प्रायः सभी कृतियों में नवजागरण और सुधारवादी आन्दोलन की प्रवृत्तियां दृष्टिगत होती हैं । इस दृष्टि से हिन्दी के तथा गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

२ उपर्युक्त युगीन चेतना के अनुसार हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासकारों की कृतियों के लक्ष्य इस प्रकार रहे हैं । हिन्दी कृतियों में

(१) भारतीय अतीत के गौरव का चित्रण

(२) राष्ट्रीय चेतना की जागृति और अभ्युदय की भावनाओं के विकासार्थ ऐतिहासिक महापुरुषों का चरित्र-चित्रण ।

(३) समाजवादी दृष्टिकोण से तथ्यों की व्याख्या एवं अपने सिद्धान्तों का निरूपण ।

(४) वैयक्तिक दृष्टिबिंदु से विषय-वस्तु की व्याख्या ।

गुजराती की कृतियों में

(१) नैतिकता का उपदेश, अंध-विश्वासों की कटु-आलोचना और उनका उपहास, एवं सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों का उन्मूलन ।

(२) आधुनिक युग के अनुरूप सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में आवश्यक परिवर्तन और अभ्युत्थान ।

(३) गुजरात और आर्यावर्त के गौरव की प्रतिष्ठापना ।

(४) ऐतिहासिक महापुरुषों का चरित्र-चित्रण । और

(५) वैयक्तिक दृष्टिकोण से विषय-वस्तु की व्याख्या ।

दोनों परंपराओं की कृतियों के लक्ष्यों का समग्रतया अवलोकन द्वारा एक यह तथ्य भी प्रकाशित होता है कि उनके मध्य में भारतीयों के वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय अभ्युत्थान के लिए उनकी भावनाएं अभिव्यक्ति के लिए कितनी प्रबल थीं ।

३ आरम्भ में हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों के ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप सम्बन्धी दो प्रकार के विचार प्राप्त होते हैं। प्रथम के अनुसार तथाकथित ऐतिहासिक वातावरण के आवरण में कल्पनाधिक्य को प्रश्रय प्राप्त हुआ, तो द्वितीय वर्ग के लेखकों ने इससे विपरीत अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास तत्त्व को प्रधानता दी है। विकास-युग में डा० वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में इन दोनों के सम्यक् समन्वय द्वारा ऐतिहासिक उपन्यास अपने वास्तविक कलात्मक स्वरूप को प्राप्त करता है। गुजराती के आरम्भिक युग के ऐतिहासिक उपन्यासकार ऐतिहासिक उपन्यास में ऐतिहासिकता के आग्रह के विषय में काफी उदार रहे हैं। अतः इनकी कृतियों में इतिहास की पृष्ठभूमि का आश्रय होते हुए भी कल्पना का स्वच्छंद प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। श्री मुंशी और उनके परवर्ती कतिपय उपन्यासकारों में ऐतिहासिकता के प्रति यद्यपि अपेक्षाकृत सजगता है, तथापि उनमें कल्पना के प्रयोग पर विशेष नियंत्रण नहीं दिखायी पड़ता।

४ हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों का आरम्भ बंगाली के ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवादों से हुआ, जबकि गुजराती में ऐतिहासिक उपन्यास का श्री गणेश श्री नंदशंकर, के " करण घेलो ", एक मौलिक रचना, से हुआ। इसके पश्चात् ऐतिहासिक उपन्यास के प्रति विकासशील लोक-रुचि को लक्ष्य में रख कर हिन्दी और गुजराती दोनों ही भाषाओं में विपुल मात्रा में अंग्रेजी, बंगाली, और मराठी के ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवाद हुए। इसके साथ ही मौलिक ऐतिहासिक उपन्यासों का सर्जन भी दोनों भाषाओं में प्रगतिशील रहा।

५ आरम्भ में ऐतिहासिक उपन्यास की विधा को लेखकों के पूर्णतया आत्मसात् न कर सकने के कारण और कुछ प्रचारात्मक दृष्टिकोण के कारण इस काल के उपन्यास प्रायोगिक अवस्था में से गुजरते दृष्टिगत होते हैं। कहीं उनमें कल्पनाधिक्य

उभर आया है, तो कहीं वे ऐतिहासिक विवरण मात्र बन कर रह गये हैं। किन्तु विकास युग में ऐतिहासिक उपन्यास अपने सन्तुलित और समुन्नत स्वरूप को प्राप्त होता है।

६ पूर्वनिर्दिष्ट लक्ष्य के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि इन दोनों परम्पराओं के लेखकों ने अपनी अपनी कृतियों के लिए मनोनुकूल ऐतिहासिक काल, विषय-वस्तु और प्रदेश विशेष का चयन किया है। हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास बौद्ध-युग, मौर्य-काल, अशोक-काल, हिन्दू-युग, मुगल-काल और ब्रिटिश-शासन में हुए १८५७ के स्वतंत्रता-आंदोलन आदि कतिपय ऐतिहासिक कालखंडों पर आधारित हैं, जब कि गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों में मौर्यकाल, मध्यकालीन गुजरात सौराष्ट्र, महाराष्ट्र का इतिहास और कुछ मुगल-काल को भी कथावस्तु का आधार बनाया गया है। प्रादेशिकता की दृष्टि से हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में बंगाल, मगध, अवध, दिल्ली, राजस्थान, बुंदेल खण्ड, विदर्भ, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य-प्रदेश, आदि भूखंडों का चित्रांकन प्राप्त होता है, तो गुजराती की कृतियों में मुख्यतया गुजरात-सौराष्ट्र और तदनन्तर तैलंग, मगध और अवन्ति के प्रदेशों का निरूपण दृष्टिगत होता है। यहां काल-खण्ड और भू-खण्ड की दृष्टि से गुजराती की अपेक्षा हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा अधिक व्यापकता लिए हुए है।

७ कलात्मक वरिष्ठता की दृष्टि से दोनों परंपराओं की अपनी-अपनी विशिष्टताएं हैं। इस पर सविस्तर विचार हम परवर्ती अध्यायों में प्रस्तुत करेंगे। यहां संक्षेप में यही कहना पर्याप्त होगा कि दोनों ही परम्पराओं के विकास-युग के ऐतिहासिक उपन्यासकार ऐतिहासिक तथ्य, औपन्यासिक कला और सम्भाव्य -कल्पना के विनियोजन के लिए सदैव प्रयत्नशील दृष्टिगत होते हैं। किन्तु हिन्दी में इतिहासो-न्मुखता अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में है, जबकि गुजराती में, यद्यपि ऐतिहासिक स्खलन नहीं हैं, तथापि स्वच्छंद कल्पना का प्रयोग कुछ अधिक है। ऐतिहासिक वातावरण का समग्र रूप

सम्यक् निरूपण भी यहां उपेक्षित सा दृष्टिगत होता है ।

८ दोनों परम्पराओं की कृतियों ने लेखकों के रचना-उद्देश्य के अनुसार काफी सफलता प्राप्त की है । एक ओर उनके कतिपय संस्करणों की संख्या से अनुमेय सामाजिक लोक-प्रियता उन्हें प्राप्त हुई है, तो दूसरी ओर वरिष्ट विवेचकों द्वारा अपने-अपने साहित्य में उनका अपना-अपना महत्त्व भी मान्य है ।

९ जीवन-दर्शन और संदेश-विशेष की दृष्टि से हिन्दी और गुजराती की दोनों परम्पराओं पर दृष्टि-निक्षेप करने पर यह व्यक्त होता है कि हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की अपेक्षा लक्ष्यगत व्यापकता अधिक है ।

१० हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की दोनों परम्पराओं का अपने अपने साहित्य में सम्यक् विकास हुआ है । गुजराती में तो उपन्यास परंपरा का आरम्भ ही ऐतिहासिक उपन्यास " करण घेलो " से हुआ । इसके अनन्तर आरम्भिक युग के कुछ-एक लेखकों के पश्चात् श्री मुंशी और उनके समकालीन उपन्यासकारों में यह परम्परा विकसित होती रही । किन्तु अब यह सर्वथा क्षीणता की स्थिति को प्राप्त हो चली है । हिन्दी की ऐतिहासिक उपन्यास-परम्परा कल्पनाधिक्य और इतिहास-प्रधानता के मोडों से ~~गुजरत~~ गुजरती हुई डा० वृन्दावन लाल वर्मा और उनके परवर्ती लेखकों की कृतियों में ऐतिहासिक उपन्यास के सम्यक् स्वरूप को प्राप्त कर अब तक प्रवहमान होती आई है और अभी तक उत्तरोत्तर प्रगतिशील है । इस प्रकार हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की दोनों परम्पराएं सुविकसित और समृद्ध हैं ।

हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की सुदीर्घकालीन परम्परा की उपरि-निर्दिष्ट पृष्ठभूमि के प्रकाश में यह आवश्यक प्रतीत होता है कि

पूर्ववर्ती अध्याय में विवेचित ऐतिहासिक उपन्यासों के विविध प्रकारों का अध्ययन स्वतंत्र रूप से किया जाय, जैसा कि सिद्धान्त पक्ष के अनुशीलन में हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि इन सभी वर्गों की कृतियों का कलात्मक वैशिष्ट्य अपना निजी महत्त्व रखता है। अतः परवर्ती अध्ययन एक एक वर्ग के हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों पर ही अपेक्षित है, जो परवर्ती विवेचन से स्पष्ट है।

ooooooo